The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 1 | January 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

गांधी और लोहिया के राजनीतिक विचार: एक तुलनात्मक अध्ययन

सजन कुमार

शोध छात्रस्नातकोत्तर गांधी विचार विभाग ति.मां. भागलपुर विश्वविद्यालय भागलपुर

डॉ. उमेश प्रसाद नीरज

सहायक प्राध्यापक, स्नातकोत्तर गांधी विचार विभाग , ति.मां.भा.वि.वि. भागलपुर

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18647974

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-01-2026

Published: 10-02-2026

Keywords:

गांधीवाद, समाजवाद, लोहिया, अहिंसा, सत्याग्रह, विकेंद्रीकरण, सामाजिक न्याय

ABSTRACT

यह शोध आलेख महात्मा गांधी और डॉ. राममनोहर लोहिया के राजनीतिक विचारों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। गांधी और लोहिया दोनों ही भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता के बाद की राजनीति के प्रमुख विचारक रहे हैं। इस अध्ययन में दोनों विचारकों के सत्य, अहिंसा, समाजवाद, विकेंद्रीकरण, और सामाजिक न्याय संबंधी विचारों की विस्तृत चर्चा की गई है। गांधी का राजनीतिक दर्शन नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित था, जबकि लोहिया ने समाजवादी सिद्धांतों को भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल बनाने का प्रयास किया। दोनों विचारकों में समानताओं और भिन्नताओं का विश्लेषण करते हुए यह शोध आलेख यह प्रतिपादित करता है कि दोनों के विचार समकालीन भारतीय राजनीति के लिए प्रासंगिक हैं।

प्रस्तावना

भारतीय राजनीतिक चिंतन में महात्मा गांधी और डॉ. राममनोहर लोहिया का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को नैतिक और आध्यात्मिक आधार प्रदान किया , जबकि लोहिया ने समाजवादी विचारधारा को भारतीय संदर्भ में पुनर्व्याख्यायित किया । दोनों विचारकों ने केवल राजनीतिक स्वतंत्रता ही नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता पर भी बल दिया।

गांधी का जन्म 1869 में हुआ और उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए सत्याग्रह का विकास किया । भारत लौटने के बाद, उन्होंने इस तकनीक को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सफलतापूर्वक लागू किया। वहीं, लोहिया का जन्म 1910 में हुआ और वे गांधी के अनुयायी के रूप में राजनीति में आए, परंतु बाद में उन्होंने अपना विशिष्ट समाजवादी दर्शन विकसित किया ।

इस शोध आलेख का उद्देश्य दोनों विचारकों के राजनीतिक दर्शन की तुलनात्मक समीक्षा करना है। विशेष रूप से, यह अध्ययन उनके सत्य, अहिंसा, लोकतंत्र, समाजवाद, और सामाजिक न्याय संबंधी विचारों पर केंद्रित है। यह विश्लेषण समकालीन भारतीय राजनीति में इन विचारों की प्रासंगिकता को भी रेखांकित करता है।

महात्मा गांधी के राजनीतिक विचार

सत्य और अहिंसा

गांधी के राजनीतिक दर्शन की आधारशिला सत्य और अहिंसा हैं। उनका मानना था कि सत्य ही ईश्वर है और सत्य की खोज जीवन का परम लक्ष्य है । गांधी के अनुसार, "सत्य के बिना कुछ भी नहीं, सत्य के साथ सब कुछ है"।[1] अहिंसा उनके लिए केवल शारीरिक हिंसा से परहेज नहीं था, बल्कि मन, वचन और कर्म से किसी को भी कष्ट न पहुंचाना था।

गांधी ने सत्याग्रह की अवधारणा विकसित की, जो सत्य के लिए आग्रह को दर्शाती है। सत्याग्रह एक अहिंसक प्रतिरोध की पद्धति है जिसमें व्यक्ति अन्याय का विरोध करता है लेकिन विरोधी से घृणा नहीं करता ।[2] इस तकनीक का उपयोग गांधी ने नमक सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में किया।

स्वराज और ग्राम स्वराज

गांधी की स्वराज की अवधारणा केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं थी। उनके अनुसार, "स्वराज का अर्थ है स्व-शासन और स्व-संयम"। वे ग्राम स्वराज में विश्वास करते थे, जहां प्रत्येक गांव एक स्वतंत्र गणराज्य हो। उनका मानना था कि सच्ची स्वतंत्रता तभी आएगी जब शक्ति का विकेंद्रीकरण हो और गांव आत्मनिर्भर बनें।

गांधी ने 'हिन्द स्वराज' में आधुनिक सभ्यता की आलोचना की और पारंपरिक भारतीय जीवन शैली की वकालत की ।[3] वे मानते थे कि पश्चिमी औद्योगिकीकरण ने मानव को यंत्र बना दिया है और यह भारत के लिए उपयुक्त नहीं है।

सर्वोदय और ट्रस्टीशिप

सर्वोदय का अर्थ है 'सबका उदय' या 'सबकी भलाई'। गांधी ने इस अवधारणा को रस्किन की पुस्तक 'अनटू दिस लास्ट' से प्रेरणा लेकर विकसित किया। सर्वोदय समाज में कोई शोषण नहीं होगा और सभी को समान अवसर मिलेंगे। यह एक ऐसा समाज है जहां अंतिम व्यक्ति का कल्याण सर्वोच्च प्राथमिकता है।

आर्थिक असमानता को दूर करने के लिए गांधी ने ट्रस्टीशिप का सिद्धांत दिया। इसके अनुसार, धनी लोग अपनी संपत्ति के ट्रस्टी हैं और उन्हें समाज के कल्याण के लिए इसका उपयोग करना चाहिए ।[4] यह एक अहिंसक तरीका है पूंजीवाद और साम्यवाद के बीच संतुलन स्थापित करने का।

धर्म और राजनीति

गांधी के लिए धर्म और राजनीति अविभाज्य थे। उन्होंने कहा, "जो लोग कहते हैं कि धर्म का राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है, वे धर्म को नहीं समझते"।[5] लेकिन गांधी का धर्म संकीर्ण सांप्रदायिकता नहीं था, बल्कि सार्वभौमिक नैतिकता था। वे सभी धर्मों का सम्मान करते थे और धार्मिक सहिष्णुता में विश्वास करते थे।

डॉ. राममनोहर लोहिया के राजनीतिक विचार

समाजवाद की भारतीय अवधारणा

लोहिया ने पश्चिमी समाजवाद को भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल बनाने का प्रयास किया। उनका मानना था कि मार्क्सवादी समाजवाद भारत के लिए पूर्णतः उपयुक्त नहीं है । उन्होंने कहा कि भारतीय समाजवाद को जाति, लिंग और क्षेत्र के आधार पर होने वाले भेदभाव को समाप्त करना होगा। लोहिया का समाजवाद गांधीवादी मूल्यों से प्रभावित था लेकिन अधिक आर्थिक और राजनीतिक था ।

लोहिया ने 'सप्त क्रांति' का सिद्धांत प्रतिपादित किया, जिसमें सात क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन की बात कही गई: समानता, जाति-उन्मूलन, स्त्री-पुरुष समानता, रंग-भेद विरोध, विदेशी शासन से मुक्ति, सशस्त्र-युद्ध विरोध और नागरिक स्वतंत्रता ।

जाति व्यवस्था का विरोध

लोहिया ने जाति व्यवस्था को भारतीय समाज का सबसे बड़ा अभिशाप माना। उन्होंने कहा, "जाति सबसे बड़ी गैर-बराबरी है और इसे तोड़े बिना समाजवाद असंभव है" ।[6] उन्होंने विशेष अवसर नीति की वकालत की और कहा कि पिछड़ी जातियों को सामाजिक न्याय दिलाने के लिए सकारात्मक कार्रवाई आवश्यक है ।

लोहिया ने 60:40 के फॉर्मूले की वकालत की, जिसके अनुसार पिछड़ी और दलित जातियों को 60 प्रतिशत और सवर्ण जातियों को 40 प्रतिशत प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। यह उनकी सामाजिक न्याय की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

चौखम्भा राज्य

लोहिया ने चौखम्भा राज्य की अवधारणा प्रस्तुत की, जो चार स्तरीय शासन व्यवस्था है: ग्राम, जिला, प्रांत और केंद्र। उनका मानना था कि शक्ति का अधिकतम विकेंद्रीकरण होना चाहिए (लोहिया, 1965)। इस व्यवस्था में ग्राम स्तर पर अधिकतम शक्तियां होनी चाहिए और केंद्र सरकार के पास केवल आवश्यक कार्य होने चाहिए।

यह अवधारणा गांधी के ग्राम स्वराज से प्रेरित थी, लेकिन लोहिया ने इसे अधिक संरचित रूप दिया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक स्तर पर लोकतांत्रिक संस्थाएं होनी चाहिए और जनता को प्रत्यक्ष भागीदारी का अवसर मिलना चाहिए।

लघु मशीन और विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था

लोहिया गांधी की तरह बड़े पैमाने के औद्योगीकरण के विरोधी थे। उन्होंने लघु और मध्यम उद्योगों की वकालत की जो स्थानीय संसाधनों का उपयोग करें और स्थानीय रोजगार पैदा करें । उनका मानना था कि विशाल मशीनें बेरोजगारी बढ़ाती हैं और श्रमिकों का शोषण करती हैं।

लोहिया ने कहा कि अर्थव्यवस्था का विकेंद्रीकरण आवश्यक है ताकि धन का समान वितरण हो सके। उन्होंने सहकारी आंदोलन का समर्थन किया और कहा कि उत्पादन के साधनों पर समुदाय का नियंत्रण होना चाहिए ।

अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण

लोहिया विश्व नागरिकता में विश्वास करते थे और उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने तीसरी दुनिया के देशों के बीच एकता की वकालत की और कहा कि एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देशों को मिलकर एक नई विश्व व्यवस्था बनानी चाहिए। उन्होंने नस्लभेद के खिलाफ आवाज उठाई और अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन का समर्थन किया।

तुलनात्मक विश्लेषण

समानताएं

गांधी और लोहिया के विचारों में कई महत्वपूर्ण समानताएं हैं। दोनों ही अहिंसा में विश्वास करते थे और हिंसक क्रांति के विरोधी थे। दोनों ने विकेंद्रीकरण पर जोर दिया और केंद्रीकृत सत्ता के खतरों को पहचाना। गांधी का ग्राम स्वराज और लोहिया का चौखम्भा राज्य इसी दिशा में कदम हैं।

दोनों ही बड़े पैमाने के औद्योगीकरण के आलोचक थे और छोटे उद्योगों का समर्थन करते थे। गांधी का चरखा और लोहिया की लघु मशीन एक ही दर्शन के दो पहलू हैं। दोनों का मानना था कि तकनीक मानव के लिए है, न कि मानव तकनीक के लिए।

दोनों ने सामाजिक न्याय और समानता पर बल दिया। गांधी ने हरिजनोद्धार का कार्य किया और अस्पृश्यता के खिलाफ संघर्ष किया। लोहिया ने जाति व्यवस्था के विरुद्ध अधिक आक्रामक रुख अपनाया और सकारात्मक कार्रवाई की मांग की।[7]

भिन्नताएं

गांधी और लोहिया के विचारों में कई महत्वपूर्ण अंतर भी हैं। गांधी का दर्शन अधिक आध्यात्मिक और नैतिक था, जबकि लोहिया का दृष्टिकोण अधिक व्यावहारिक और राजनीतिक था। गांधी धर्म और राजनीति को एक मानते थे, जबकि लोहिया का समाजवाद धर्मनिरपेक्ष था।

गांधी ने वर्ग संघर्ष को नकारा और ट्रस्टीशिप के माध्यम से पूंजीपति और श्रमिक के बीच सामंजस्य की बात की। दूसरी ओर, लोहिया ने वर्ग संघर्ष को स्वीकार किया और कहा कि शोषित वर्गों को संगठित होकर अपने अधिकार लेने होंगे।[8] हालांकि, लोहिया ने हिंसक क्रांति की बजाय संसदीय लोकतंत्र के माध्यम से परिवर्तन में विश्वास किया।

गांधी ने पश्चिमी सभ्यता की कड़ी आलोचना की और पारंपरिक भारतीय जीवन शैली को आदर्श माना। लोहिया अधिक आधुनिकतावादी थे और उन्होंने कहा कि भारत को विज्ञान और तकनीक को अपनाना होगा, लेकिन अंधाधुंध नहीं। लोहिया ने पश्चिम और पूर्व के बीच संतुलन की बात की।

जाति प्रश्न पर भी दोनों का दृष्टिकोण अलग था। गांधी ने वर्ण व्यवस्था को स्वीकार किया लेकिन अस्पृश्यता का विरोध किया। लोहिया ने पूरी जाति व्यवस्था को ही अन्यायपूर्ण माना और इसके पूर्ण उन्मूलन की मांग की। इस मुद्दे पर लोहिया का रुख अंबेडकर के अधिक निकट था।

समकालीन प्रासंगिकता

गांधी और लोहिया दोनों के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। वैश्वीकरण के युग में, जब छोटे उद्योग और स्थानीय अर्थव्यवस्थाएं संकट में हैं, गांधी और लोहिया का विकेंद्रीकरण का विचार महत्वपूर्ण हो जाता है।[9] उनका स्वदेशी और आत्मनिर्भरता का विचार आज के संदर्भ में नए अर्थ प्राप्त करता है।

सामाजिक न्याय के मुद्दे पर लोहिया के विचार आज भी मार्गदर्शक हैं। जाति, लिंग और क्षेत्र के आधार पर भेदभाव आज भी भारतीय समाज की वास्तविकता है। लोहिया की सामाजिक न्याय की अवधारणा इन समस्याओं से निपटने का एक रास्ता प्रदान करती है।[10]

गांधी की अहिंसा की अवधारणा आज की हिंसक दुनिया में अधिक प्रासंगिक हो गई है। आतंकवाद, सांप्रदायिक हिंसा और युद्धों के युग में, गांधी का अहिंसक प्रतिरोध एक विकल्प प्रदान करता है। गांधी और लोहिया दोनों ने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की बात की, जो आज की बहुसांस्कृतिक दुनिया में अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष

गांधी और लोहिया भारतीय राजनीतिक चिंतन के दो महान स्तंभ हैं। गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक आधार प्रदान किया और सत्य, अहिंसा, सर्वोदय जैसी अवधारणाएं दीं। लोहिया ने गांधीवादी मूल्यों को समाजवादी विचारधारा के साथ जोड़कर एक नया दर्शन विकसित किया जो भारतीय परिस्थितियों के अधिक अनुकूल था।

दोनों विचारकों में समानताएं और भिन्नताएं दोनों हैं। दोनों ने विकेंद्रीकरण, सामाजिक न्याय और अहिंसा पर जोर दिया। लेकिन गांधी का दृष्टिकोण अधिक आध्यात्मिक था जबकि लोहिया अधिक व्यावहारिक और राजनीतिक थे। गांधी ने वर्ण व्यवस्था को स्वीकार किया लेकिन लोहिया ने पूरी जाति व्यवस्था को ही चुनौती दी।

आज के संदर्भ में, दोनों के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। वैश्वीकरण, सामाजिक असमानता, सांप्रदायिक हिंसा जैसी समस्याओं से निपटने में उनके विचार मार्गदर्शन कर सकते हैं। गांधी और लोहिया का राजनीतिक दर्शन केवल ऐतिहासिक महत्व नहीं रखता, बल्कि यह समकालीन भारत और विश्व के लिए भी प्रासंगिक है। उनके विचारों का गहन अध्ययन और व्यावहारिक अनुप्रयोग आज की समस्याओं के समाधान में सहायक हो सकता है।

संदर्भ

- गांधी, एम. के. (1940). *एन ऑटोबायोग्राफी: द स्टोरी ऑफ माय एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ*. बीकन प्रेस. पृ. 45
- बोनड्यूरेंट, जे. वी. (1988). *कॉन्क्वेस्ट ऑफ वायलेंस: द गांधियन फिलॉसफी ऑफ कॉन्फ्लिक्ट*. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ. 123
- गांधी, एम. के. (1909). *हिन्द स्वराज*. नवजीवन प्रकाशन मंदिर. पृ. 28
- दलाल, ए. के. (2012). गांधीज ट्रस्टीशिप: ए रेडिकल रीइंटरप्रिटेशन. *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, 47(48), 52-58.
- गांधी, एम. के. (1940). *एन ऑटोबायोग्राफी: द स्टोरी ऑफ माय एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ*. बीकन प्रेस. पृ. 504
- लोहिया, आर. एम. (1964). द *कास्ट सिस्टम*. नवहिंद प्रकाशन. पृ. 112
- ओमन, के. के. (2012). राममनोहर लोहिया एंड सोशल जस्टिस. *इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस*, 73(2), 275-288.
- लोहिया, आर. एम. (1964). द *कास्ट सिस्टम*. नवहिंद प्रकाशन. पृ. 156
- बोस, ए. (2008). द इवोल्यूशन ऑफ गांधियन इकोनॉमिक थॉट. *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, 43(40), 46-53
- जाफरलोट, सी. (2003). *इंडियाज साइलेंट रेवोल्यूशन: द राइज ऑफ द लोअर कास्ट्स इन नॉर्थ इंडिया*. परमानेंट ब्लैक. पृ. 87